उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
द्विगीत – भाग – 2 – काव्य खण्ड
शीर्षक – कड़बक, कवि – जायसी

डॉ० देवचरण प्रसाद
Date: 19/06/2021
एसो० प्रो० हिन्दी
श्र०उ० सं०म० संस्कृत महाविद्यालय, ...

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :– कड़बक क्या है?
सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने ग्रंथ पद्मावत तथा अखरावट में लेखन का एक ढंग अपनाया है। उसमें सात चौपाइयों के बाद एक दोहा रखने का क्रम है। यही क्रम विधान पूरी रचना में है। इसी इकाई को कड़बक कहा जाता है। इसे हम छन्द विधान की पद्धति भी मान सकते हैं।

प्रश्न :– प्रेम की पीर क्या है?
उत्तर :– हिन्दी साहित्य के इतिहास में मुसलमान संतों के एक समूह को [redacted] संत कहा गया है। इनमें जो दार्शनिक मान्यता प्रचलित है उसके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति उनके वियोग में तड़पने और तन्मयता पूर्वक एक निष्ठ भाव से प्रेम दशा में रहने से होती है। अतः प्रेम में पीड़ा की अनुभूति यही प्रेम की पीर है।

प्रश्न :– रतनसेन कौन थे?

उत्तर :– रतन सेन चितौड़ के राजा थे। उन्होंने बड़ी प्रेम साधना के उपरांत पद्मावती को प्रेमिका पत्नी के रूप में प्राप्त किया था। अलाउद्दीन दिल्ली का मुसलमान शासक था। उसने पद्मावती के रूप की प्रशंसा सुनकर उसे पाने के लिए चितौड़ पर आक्रमण कर दिया। राघव चेतन रतन सेन का दरबारी पंडित था। किसी कारण वश राजा ने उसे दरबार से निकाल दिया था। उसी ने बदला लेने के लिए अलाउद्दीन को प्रेरित किया था। इसी प्रेमकथा पर जायसी ने अपना पद्मावत काव्य लिखा है।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

डॉ० देवचरण प्रसाद
प्रयो० प्रो० हिन्दी
ग्रा० कृ० सं० महाविद्यालय
19/06/2021 [illegible]

'निर्मला' उपन्यास
लेखक – मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:– 'निर्मला' उपन्यास की विषयवस्तु के औपन्यासिक गठन की समीक्षा– शेष भाग।

उत्तर:– मंसाराम की मृत्यु मुंशी तोताराम के सन्देह को दूर कर देती है। वे पश्चाताप से भर जाते हैं। वे मंसाराम के प्रति निर्मला के विशुद्ध वात्सल्य को पहचान लेते हैं। पुत्रशोक में मुंशी तोताराम की हालत बिगड़ती चली जाती है। साथ ही साथ उनकी वकालत का पेशा भी मन्द होती जा रही है।

इसी बीच में सुधा और उसके पति डॉक्टर भुवन-मोहन सिन्हा की कथा प्रारम्भ हो जाती है। डॉक्टर सिन्हा वही हैं, जिनसे निर्मला के विवाह की बात-चीत पक्की होकर टूट ~~जाती~~ गई थी। सुधा निर्मला की सारी करुणा गाथा सुनकर काफी चिंतित हो जाती है। वह अपने देवर का विवाह निर्मला की छोटी बहिन कृष्णा से करा देती है। निर्मला को लड़की होती है और सुधा को लड़का। मुंशी तोताराम निर्मला की पुत्री में अपने खोये हुए पुत्र को पाना चाहते हैं।

उपन्यास में पुनः नाटकीय मोड़ उपस्थित होता है। सुधा के पुत्र की मृत्यु हो जाती है। निर्मला मायके से अपने घर आ जाती है। मुंशी तोताराम के दोनों पुत्र इतने अधिक उच्छृंखल हो जाते हैं कि उनसे वे लड़ने लगते हैं। निर्मला के आते ही घर में द्वन्द्व और अधिक बढ़ जाता है। मुंशी तोताराम की वकालत से आय और कम हो जाती है। अतः निर्मला गृहस्थी का खर्चा पूरा करने और पुत्री के भविष्य की चिंता में कंजूसी करना शुरू कर देती है।

मुंशी तोताराम के लड़कों की उच्छृंखलता बढ़ती चली जाती है। जियाराम एक दिन निर्मला के आभूषणों की पेटी चुरा लेता है। पुलिस में रिपोर्ट होती है, जियाराम पकड़ा जाता है। निर्मला पुलिस को रिश्वत देकर मामला रफा-दफा करने के लिए पति को

शेष आगे–

Page No.
Date

मैजती है। इसी बीच जियाराम जहर खाकर आत्महत्या कर लेता है। इस घटना से निर्मला में कठोरता चली आ जाती है। वह सियाराम को ताड़ना देने लगती है सियाराम घर से ऊब कर साधु हो जाता है मुंशी- तोताराम उसकी खोज में निकल पड़ते हैं। शेष अगले कक्षा में

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय
13/06/21 कुचायकोट
प्रेषित

शीर्षक:- 'महा-मानव- सागर-तीरे'

लेखक:- डॉ० रमाकान्त पाठक

प्रश्न:- बंगाल प्रतापी वीरों की धरती है। लेखक के इस कथन पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- लेखक डॉ० रमाकान्त पाठक अपने प्रसिद्ध निबंध 'महा-मानव- सागर-तीरे' में बंगाल को प्रतापी वीरों की धरती कहा है। इसको सिद्ध करने के लिए उन्होंने बहुत सारे उदाहरणों का उल्लेख किया है। लेखक कहता है कि यहाँ अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए दुधमुँहे खुदीराम जैसे बच्चे भी खेल-खेल में आजादी के लिए बम फेंका करते थे। आजादी के इन दिवानों ने तो भय को जीत लिया था। यही कारण है कि अंग्रेज बंगाल से काफी भयभीत रहने लगे थे। उन्हें लगा कि यहाँ का मजिस्ट्रेट भी छिपकर 'कृष्ण-चरित' और आनन्दमठ लिखता है। वह नौकरी से भी बड़ी चीज अपने स्वतंत्रता संग्राम को समझ रहा था। वह दफ्तर से निकलने के पहले ही मजिस्ट्रेटी के कोट को वहीं खूँटी में टाँग देता है।

बंगाल की भूमि रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस, ईश्वरचन्द विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की धरती है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रेजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात् शंकर बन गये हैं। इस गंगासागर क्षेत्र के महासागर के किनारे जिन महामानवों ने जन्म लिया है वे सम्पूर्ण भारत के लिए एक प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

लेखक का कहना है कि बंगाल की मिट्टी में ही एक ऐसी विशेषता है जो त्याग, तप, बलिदान एवं कुर्बानी में सम्पूर्ण देश के नेतृत्व की क्षमता रखती है। बंगाल एवं अन्य प्रान्तों के अन्तर को रेखांकित करते हुए पाठक जी पश्चिमी सभ्यता के स्वागत के ढंग की चर्चा करते हैं। कहते हैं कि इस कलिकाल में इस माया सुन्दरी के स्वागत में दो भाई लड़े हुए। एक तमिलनाडु दूसरा बंगाल।

शेष आगे-

Page No.
Date

परन्तु दोनों के स्वागत, स्वागत में अन्तर था। जिस के कारण अंग्रेजी साम्राज्य में रेशमी फीते के प्रथम शहीद हुए बँगाल के महाराज नन्द कुमार और भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल बने तमिलनाडु के नेता श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

लेखक का विश्वास है कि हर संकटों में त्राण दिलाने वाली इस बंग भूमि में ही किसी दिन इस सागर के तट पर महामानव नारायण का अवतार हो तो कोई आश्चर्य नहीं। ऋषियों की भारतमाता को सैकड़ों बार प्रणाम।